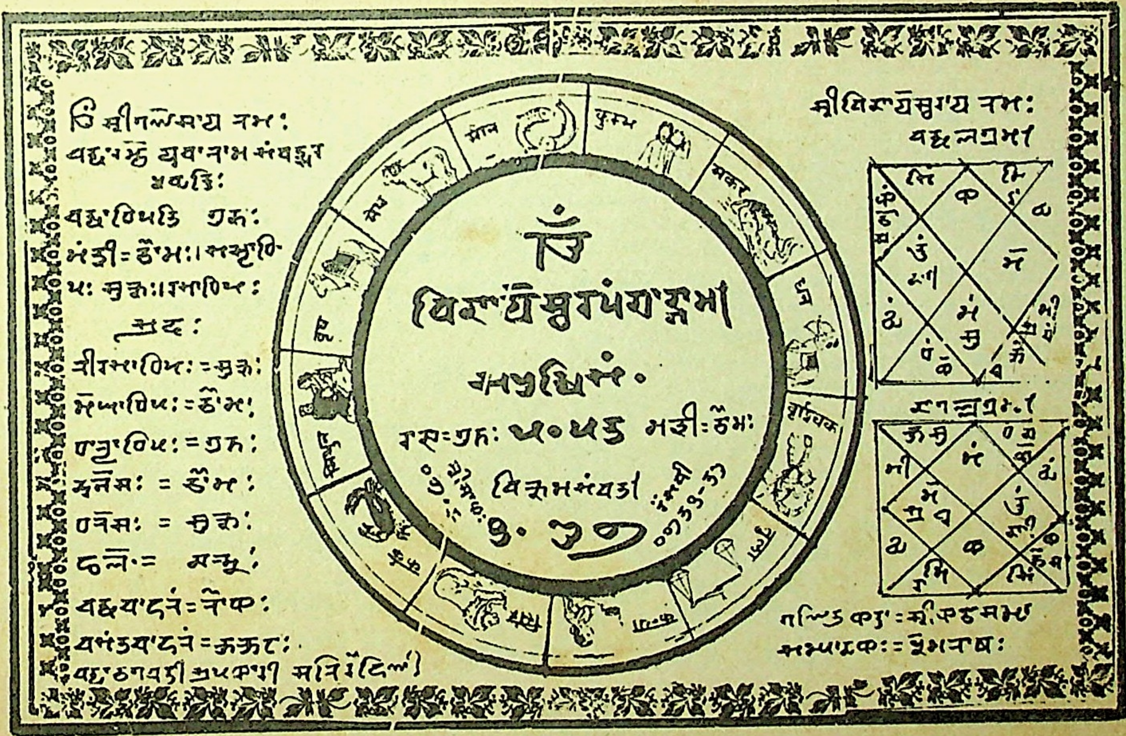
#102

[illegible]

[illegible]

1982–83



[illegible]

I

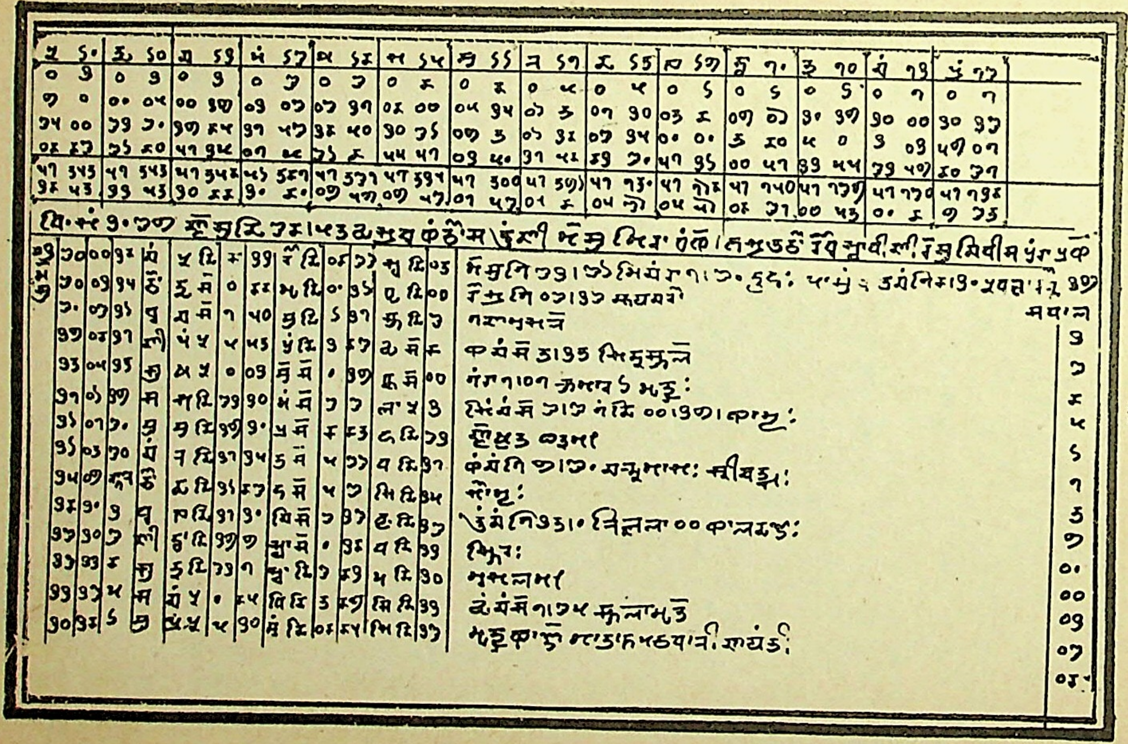
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

3



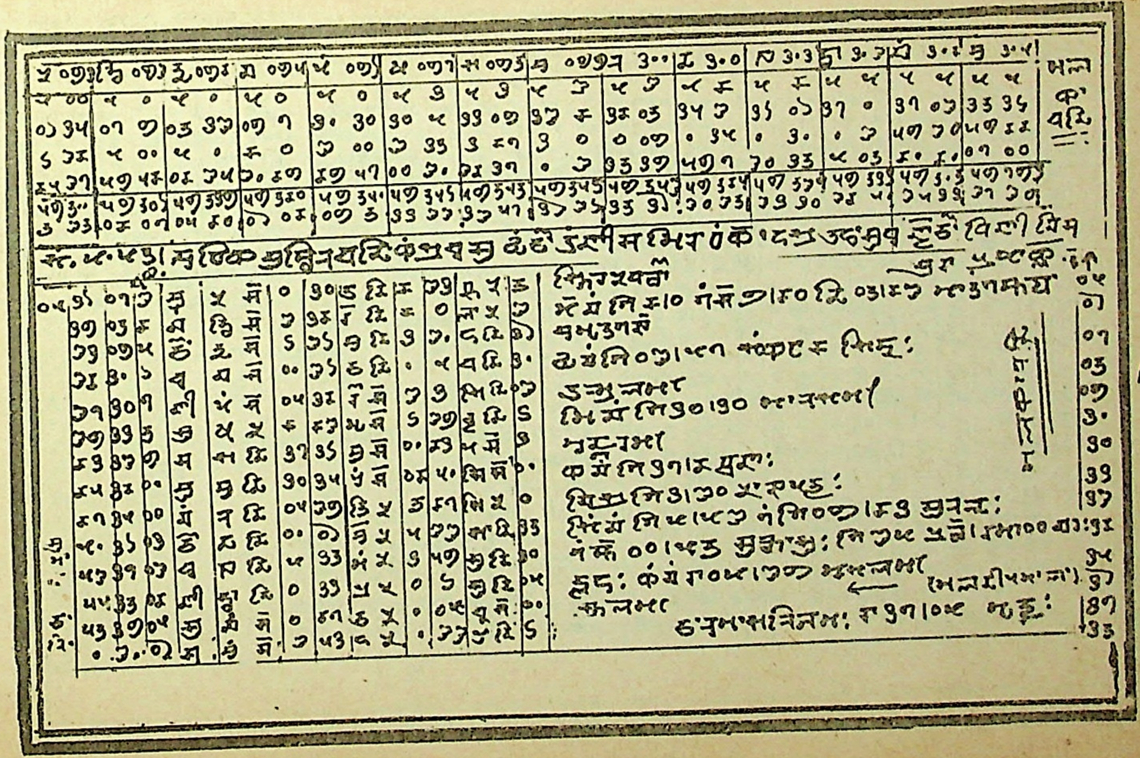
5

12

[illegible]

[illegible]

13



14

15

16

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

17

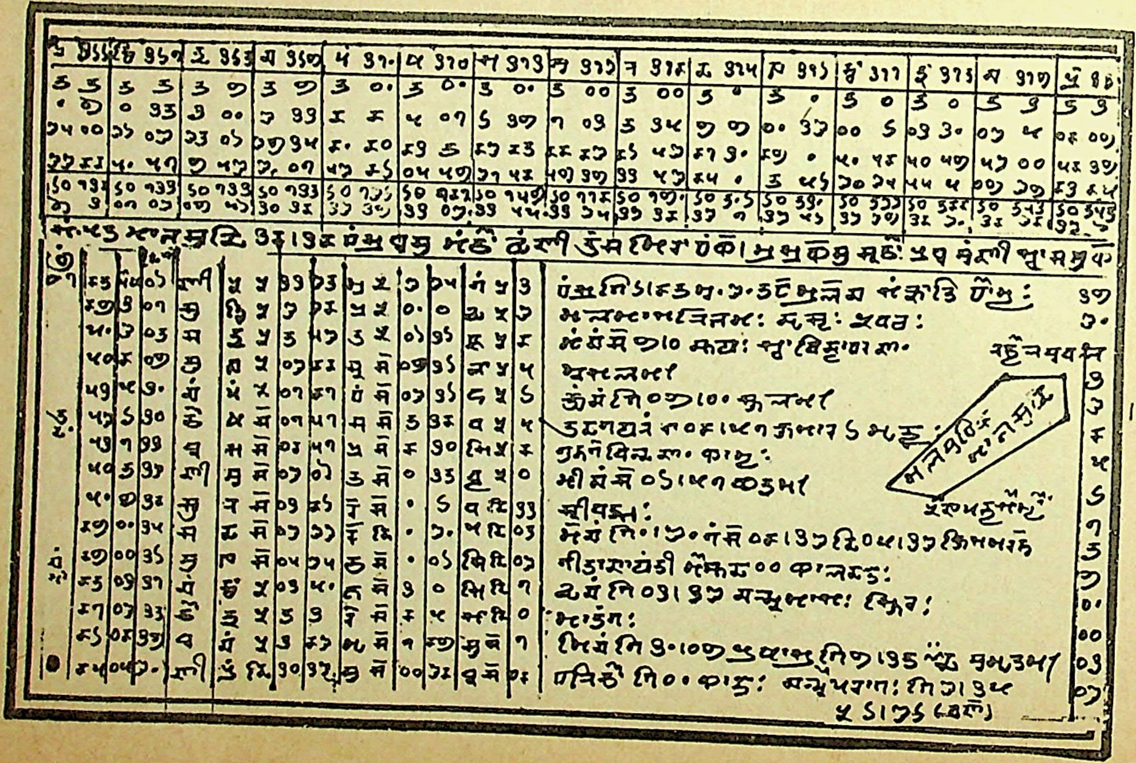
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

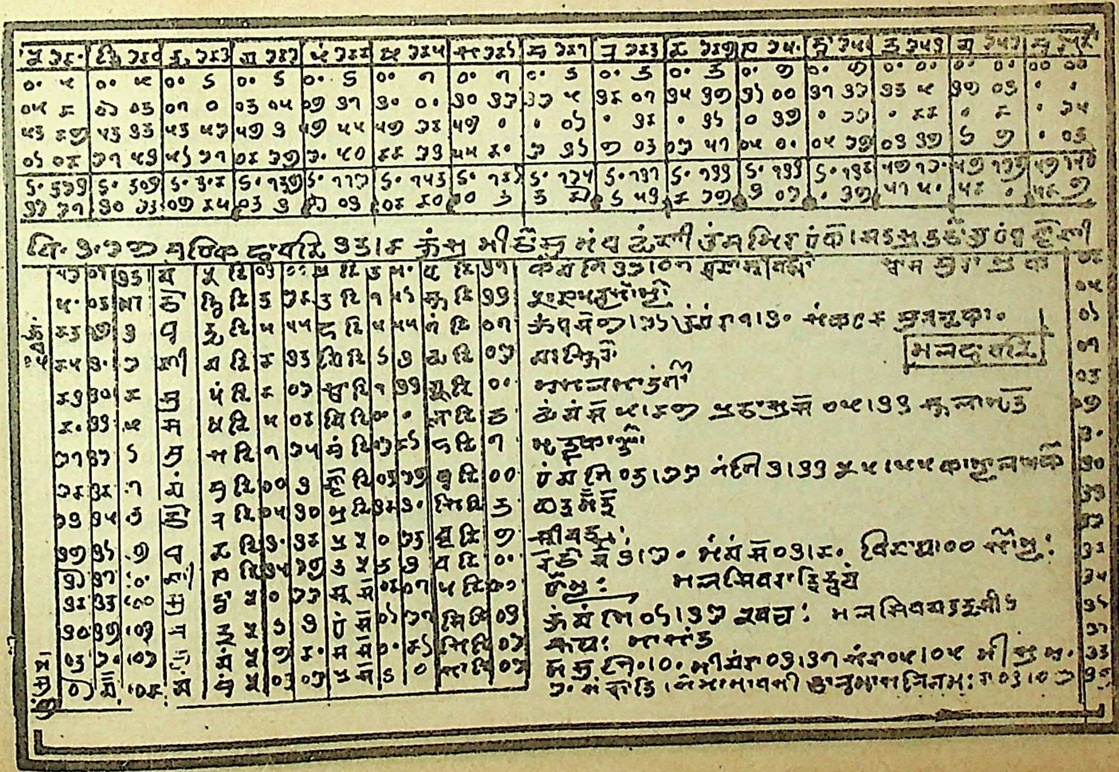
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

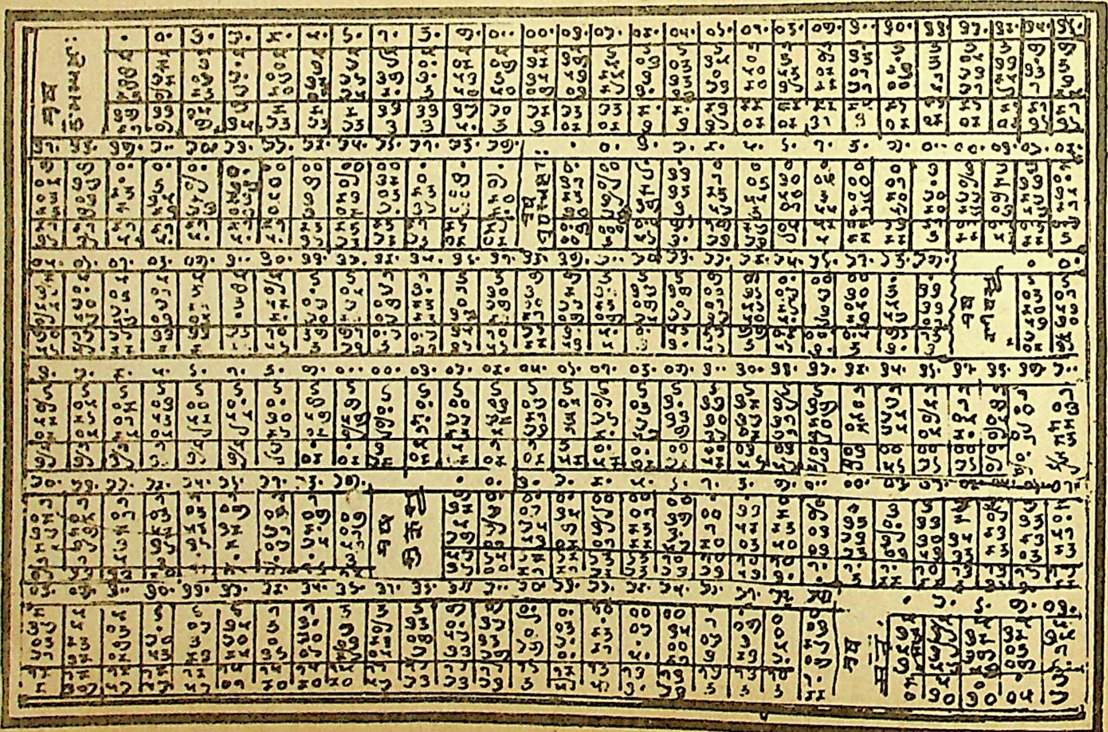
18



23



24



29

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

30

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स ४०५८

वि २०३५

ई १९८२ — ८३

प्राचीन मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र, जादू व सामुद्रिक ग्रन्थ

असली प्रा हस्तलि० मंत्र महार्णव 171/-
असली प्रा हस्तलि० यंत्र महार्णव 171/-
असली प्रा हस्तलि० तंत्र महार्णव 171/-
मंत्र-यंत्र तंत्र विज्ञान भास्कर 501/-
वृहद् संहिता (संपूर्ण फलित ग्रंथ) 121/-
असली प्राचीन रावण संहिता 501/-
अ.प्रा.हस्त. भृगुसंहिता महाशास्त्र 501/-
सचित्र स्त्री पुरुष वशीकरण सिद्धि 21/-
भूत-प्रेत, जादू टोना, मंतर मंत्र 21/-
प्रेतात्मा, डाकिनी, ओझाविद्या सिद्धि 21/-
देवी-देवता-पूजन यन्त्र 21/-
महाविद्यासिद्धि 21/- लघुमंत्रमहोदधि 21/-
हमजाद (छाया पुरुष) सिद्धि 21/-
योगिनी सिद्धि 21/- भैरव सिद्धि 21/-
यंत्र-शक्ति वि. 21/- तंत्र-शक्ति वि. 21/-
मंत्र-शक्ति वि. 21/- मोहनीवि.सिद्धि 21/-
वटुक भैरव सिद्धि 21/- लक्ष्मी सिद्धि 21/-
महाविकराल भैरव सिद्धि 21/-
किलकारीभैरव सि. 21/- कामाक्षा . 21/-
ऋद्धि-सिद्धि मंत्रावली 21/-
असली प्रा. सच्ची आकर्षणशक्तियां 24/-
तांत्रिक साधन यंत्र, मंत्र, तंत्र सिद्धि 21/-
वशीकरण मोहिनी विद्या (हिप्नोटिज्म) 21/-
सिद्ध रुद्राक्ष प्रयोग विधि 21/-
देवी देवता हनुमान, छाया पुरुष एव
यक्षिणी भैरव सिद्धि के प्रयोग 21/-
भूत-प्रेत, अघोर दक्षिणी विद्या सिद्धि 21/-
मनोकामना, कामाख्या, अष्ट लक्ष्मी सिद्धि 21/-
रत्न-परिचय, रत्न-प्रदीप, रत्न विज्ञान 21/-
स्वास्तिक एवं ॐ रहस्य 21/-
पुस्तक सिद्ध बीसा यन्त्र 21/-
शिव मंत्रावली (तंत्रावली सहित) 21/-
मिस्मिरेजम हिप्नो शक्तिचक्र सम्मोहन 21/-
अ.प्राचीन यंत्र-मंत्र-तंत्रशिरोमणि 321/-

असली प्रा.हस्तलि वृहद् मंत्र-मार्तण्ड 501/-
तन्त्र कौतुहलम् 251/-
तांत्रिक सर्वस्व 201/-
जादूगर कैसे बनें? 24/ ताश मैजिक 24/-
घर बैठे जादू सीखिये 24/-ताशके जादू 5/-
जादूगर बादशाह 10/- दत्तात्रेय तंत्र 10/-
महात्मा रावण कृत उड्डीश तंत्र 10/-
इच्छापूरक सिद्धियां (मनवांछित फल की
प्राप्ति) 24/- सचित्र करामात 15/-
वृ.वि. सामुद्रिक वि (सं. दो खंड) 163/50
असली प्राचीन सिद्धिदाता-यंत्र-तंत्र-मंत्र
महाशास्त्र (सम्पूर्ण दोनों खंड) 201/-
कौआ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सिद्धि 10/-
उल्लू यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सिद्धि 10/-
बाज, गिद्ध, मुर्गा यंत्र-तंत्र-मंत्र सिद्धि 10/-
पंच पक्षी यंत्र-तंत्र-मंत्र सिद्धि 30/-
यंत्र-मंत्र-तंत्र चिकित्सा 24/-
प्राचीन सच्ची करामाती सिद्धियां 30/-
शिवतन्त्रावली (शिवजी के तंत्र) [illegible]/-
हनुमत् सिद्धि 71/- मोहिनीमंत्र-तंत्र [illegible]/-
प्राचीन यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सार [illegible]/-
अ. प्रा. हस्तलि. वृ. मंत्रमहोदधि [illegible]/-
काला जादू (घर का मदारी) 10/-
चीन जापान बंगाल आसाम का जादू 51/-
जादू मिस्मिरेजम 10/- वशीकरणमंत्र 15/-
अ. प्रा. हस्तलि० भारत का जादू 51/-
वृ. इंद्रजाल (कौतुक रत्न भंडागार) 15/-
असली प्राचीन हस्तलि० इन्द्रजाल 31/-
असली प्राचीन डामर तन्त्र 21/-
चौदह विद्या चौंसठ कला 15/-
मायामछंदरजाल 51/-जादूगरीशिक्षा 15/-
दक्षिण का जादू (जिन्दा जादूगर) 15/-
सांवरी तन्त्र (सेवड़े का जादू) 15/-
नवीन अपटूडेट जादूगरी (दोनों भाग) 48/-

पता देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार दिल्ली-6

सकल पदारथ है जग माही । [illegible] नर पावत नाही ॥

असली, प्राचीन, हस्[illegible] ग्रन्थ

भृगुसंहिता महाशास्त्र (भा[illegible])

● प्राचीनकाल में जब कि आज की भांति छपाई आदि क[illegible] नहीं था, हमारे ऋषियों-मुनियों ने ग्रन्थों की रचना करके अपनी शिष्य-प[illegible] अनुसार उन्हें अक्षरशः स्मरण कराकर इस ज्ञान भण्डार को आगे बढ़ाया[illegible] तत्पश्चात् ताड़ वृक्ष के पत्तों तथा भोजपत्र आदि पर इन ग्रन्थों को लिखा गया[illegible] बाद के कालखण्ड में विधर्मियों तथा आतंकवादियों ने इन ग्रन्थों को नष्ट करने का सामूहिक तथा योजनाबद्ध प्रयास किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सर्वांगीण पूर्ण ग्रन्थ दुष्प्राप्य हो गये। यदि कहीं कोई ग्रन्थ बचा तो उसके भी खण्ड-खण्ड हो गये अथवा विदेशी उठाकर ले गये। ऐसे ही दुर्लभ ग्रन्थों में "भृगुसंहिता महाशास्त्र" की गणना होती है, जिसका केवल नाम सुना था। कहा जाता है, किसी समय भृगु ऋषि द्वारा विष्णु भगवान की छाती में लात मारी जाने पर लक्ष्मी जी ने श्राप दिया था कि ब्राह्मण सदा निर्धन रहेंगे। तब भृगु जी ने लक्ष्मी जी से कहा था—"मैं एक ऐसा ग्रन्थ रचूंगा कि जिस किसी के पास यह महाग्रन्थ (भृगुसंहिता) होगा, लक्ष्मी सर्वदा उसका चरण-चुम्बन करेगी।"

● अनेक अल्पज्ञ पंडित "भृगुसंहिता महाशास्त्र" के असली होने में सन्देह करते हैं। यह ग्रन्थ प्राचीनकाल से श्रवणगोचर होता रहा है। कुछ पंडित एवं ज्योतिषी जिनके पास हस्तलिखित ग्रन्थ का कुछ भाग पाया जाता है, वे कई पीढ़ियों से ग्रन्थ को दिखा-सुनाकर जनता से उनकी कुण्डली का फलादेश बताकर **21/-** (इक्कीस रुपये) से **551/-** (पांच सौ इक्यावन) रुपये अथवा मुंह-मांगी दक्षिणा तक ले लेते हैं। श्री भृगुऋषि रचित "भृगुसंहिता" जैसा भूत, भविष्य वर्तमान का पूर्ण विवरण बताने वाला महाग्रन्थ आज तक देखा न गया था, हां नाम ही सुना था। ● इस ग्रन्थ को भाग्यवान ही प्राप्त कर सकता है।

● संसार में कुछ भी असम्भव नहीं है। अनेक वर्षों तक अनथक परिश्रम तथा हजारों रुपया खर्च करके, कुण्डली के आधार पर भूत, भविष्य, वर्तमान का फलादेश बताने वाला हस्तलिखित "भृगुसंहिता महाशास्त्र" तैयार है।

20 × 30/6 (पुराण साइज), खुले पत्राकार, हस्तलिखित **1,410** पृष्ठ, **14** खण्डों में सम्पूर्ण, ऑफसेट प्रिंट। इस विशाल ग्रन्थ में अगणित कुण्डलियां दी गई हैं। इस महाशास्त्र में वर्णित विधि अनुसार संसार के किसी भी व्यक्ति की जन्म-कुण्डली का फलादेश आसानी से ज्ञात हो जाता है। संस्कृत के श्लोकों के साथ-साथ हिन्दी टीका इस ग्रन्थ की विशेषता है। सर्व जनोपयोगी इस विशाल ग्रन्थ की न्योछावर **501/-** (पांच सौ एक रुपये) है। ग्रन्थ सीमित संख्या में छपा है। अतः आज ही **51/** M.O. द्वारा भेजकर बाकी **450/-** (चार सौ पचास) रुपये की वी० [illegible] द्वारा घर [illegible] ग्रन्थ प्राप्त करें।